विषय सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.
1.	सूकर की नस्लें	01
2.	छ.ग. के आदिवासी अंचल में सूकर विकास	03
3.	सूकर पालन कला	07
4.	आवास व्यवस्था	12
5.	आहार व्यवस्था	17
6.	बीमारियों से बचाव	21
7.	सूकरों में प्रमुख विषाणु जनित रोग एवं उनकी रोकथाम	23
8.	सूकर पालन की आर्थिकी	28
9.	पशुपालन विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएं	31
10.	सफलता की कहानी	33

संकलनकर्ताः–

डॉ. वाय. एन. शुक्ला, डॉ. के. के. श्रीवास्तव, डॉ. मेरी. बी. जॉन,
डॉ. आर. सी. रामटेके, डॉ. उपासना साहू, डॉ. अंजू शर्मा,
डॉ नीतू गौरड़िया, डॉ. गौतम राय, डॉ. सुनीता राय,
डॉ. निशा जैन एवं डॉ. महावीर सरसींहा

सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी प्रशिक्षण केन्द्र महासमुन्द–493445
संचालनालय, पशु चिकित्सा सेवायें प्रांगण, जी. ई. रोड रायपुर–492001
दूरभाष : 0771–2424961, फैक्स 0771–2424961

(राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के सौजन्य से)

चेस्टर वाइट

ड्यूरौक

हेयरफोर्ड

1. सूकर की नस्लें

क्र.	नस्ल	महत्वपूर्ण लक्षण
1.	**लार्जवाइट यार्कशायर** (LWY)	(i) यह एक प्रसिद्ध 'English बेकन' नस्ल है जो कि उत्तरी इंग्लैण्ड स्थित Yorkshire में पायी जाती है। (ii) ये अच्छी मां होती है। ये दुधारू नस्ल होती है। पुरे शरीर का सफेद रंग होता है तथा बीज में काले धब्बे होते हैं। जो कि frakles कहलाते हैं। (iii) इनका सिर लंबा चेहरा स्नाऊट (थूथन) चौड़ा होता है। (iv) परिपक्व आयु के नर सूकर का नर वजन 300–450kg होता है। मादा 250–350kg होता है।
2.	**मिडिलवाइट यार्कशायर** (MWY)	(i) यह नस्ल, उत्तरी England स्थित Yorkshire में LWY के साथ क्रास करके बनी है। (ii) यह नस्ल भी Pork Pig के लिए उत्तम मानी गई है। (iii) LWY की तुलना में इसका शरीर तेजी से विकसित होता है। (iv) भारत में इसका उपयोग देशी सूकरों की नस्ल सुधार हेतु किया जाता है। (v) रंग–सफेद, थूथन–छोटा, जबड़ा–सीधा तथा चमड़ी बिना धब्बे वाली होती है जिससे सिकुड़न नहीं होता है। (vi) वयस्क नर 270–360 kg.
3.	**बर्कशायर**	(i) इसकी उत्पत्ति Berkshire (south central) दक्षिण–मध्य इंग्लैण्ड में हुई है। (ii) यह नस्ल अच्छी किस्म के pork के लिए जाती है। (iii) भारत में इसका उपयोग नस्ल सुधार के लिए किया जाता है। (iv) यह काले रंग के होती है तथा शरीर के 6 हिस्सों में सफेद चिन्ह होते हैं। (markings) मुख्यतः चारों पैरों में, नाक तथा पूंछ।

		(v) इसका सिर छोटा तथा घुमा हुआ तथा कान खड़े होते हैं। पैर अपेक्षाकृत लंबे होते हैं। (vi) Mature नर–275-375kg मादा–200-290 kg
4.	**टैमवर्थ**	(i) यह मध्य इंग्लैण्ड स्थित 'टैमवर्थ' नामक शहर की है। (ii) शरीर का रंग लाल सुनहरा होता है जो कि हल्का से गाढ़ा हो सकता है। (iii) पैर–लंबे, पुट्ठे–कड़े होते हैं। सिर लंबा व थूथन के पास संकरा हो जाता है। कान लंबे तथा खड़े होते हैं। (iv) उत्तम (quality) का pork मिलता है। (v) नर – 350kg, मादा–250-300kg. (vi) पूरे, दक्षिणी Asia के देशों में यह नस्ल सुधार हेतु उपयोग में लाई जाती है।
5.	**ड्यूरौक**	(i) यह जर्सी–रेड्स एवं Newyork के डयूरॉक को Cross करके उत्पन्न की गई है। (ii) इसका रंग लाल होता है जो कि सुनहरे चेरी लाल रंग की हो सकती है। (iii) इस नस्ल के सूकर की विशेषता है कि कम खाकर ज्यादा वजन बढ़ाते हैं। (iv) नर – 400kg, मादा–350 kg.
6.	**चेस्टर वाइट**	(i) यह USA के chester एवं della countries में उत्पन्न हुई नस्ल है। (ii) इसका रंग सफेद जिसमें नीले चकते पाए जाते हैं। (iii) इनकी मादा बहुत बच्चे देने वाली होती हैं। (iv) ये ज्यादा खाने वाले तथा जल्दी mature होने वाले होते हैं तथा मांस–उत्पादन भी अधिक होती है।
7.	**हेयरफोर्ड** Hereford	(i) यह सूकर की नई नस्ल है जिसकी उत्पत्ति USA के मिसूरी प्रान्त में हुई है। (ii) रंग Hereford cattle के समान है जो कि दो तिहाई लाल रंग का होता है जिसका मुंह सफेद होता है। (iii) खुर सफेद होते हैं। (iv) ये अपेक्षाकृत छोटे होते हैं।

2. छ.ग. के आदिवासी अंचल में सूकर विकास

सूकर बहुत तेजी से बढ़ने वाले पशु होते है। अच्छे रखरखाव की परिस्थिति में वयस्क मादा सूकर वर्ष में दो बार बच्चे दे सकती है और एक बार में लगभग 10 से 12 तक बच्चे देती है। सूकर के कुल भार का लगभग 65 से 80 प्रतिशत वजन के बराबर मांस प्राप्त हो सकता है। सूकर के पेट में चारा खाने वाले पशुओं के पेट की तरह अमाशय में चार खाने न होकर एक ही सम्पूर्ण अमाशय होता है अतः यह उन पशुओं की तरह भोथरा चारा आदि का उपयोग नहीं कर पाता है, इसलिए सूकर को अधिकतम मात्रा में सान्द्र आहार एवं कम से कम मात्रा में रेशे वाले भोजन (चारा, भूसा आदि) की आवश्यकता होती है।

छ.ग. का आदिवासी एवं घरेलू सूकर पालन

छ.ग में सभी आदिवासी जातियों के लोग सूकर पालन करते हैं। सड़क से दूर पहाड़ी क्षेत्रों में आज भी ये लोग अपने पारम्परिक तरीकों से देशी सूकर ही पालते हैं जबकि पहुंच वाले गांवों में जहां सरकारी योजनाओं का लाभ मिल चुका है, सूकर पालन में कुछ परिवर्तन आया है।

वहां अब वे ऋण योजनाओं के अन्तर्गत मिलने वाले ''लार्ज व्हाइट यार्क शायर'' और ''मिडिल व्हाइट यार्क शायर'' नस्ल के सूकर भी पालते है।

गांव के अन्य देशी सूकरों की नस्ल भी बदल रही है। प्रायः काले सफेद धब्बों वाले सूकर देखने को मिल जाती है।

बच्चे देते समय मादा सूकर को समूह से अलग रखा जाता है।

मादा सूकर का उपयोग मांस की अपेक्षा बच्चे पैदा करने के लिए अधिक करते है। हालांकि मौका पड़ने पर अनभिज्ञ आदिवासी मादा सूकर का वध करने से भी नहीं चूकते।

दो से तीन माह की उम्र तक बच्चों को अपनी मां का दूध पिलाया जाता है, इस दौरान न तो पिल्लों की बिक्री होती है, न ही माई सूकर की।

पहले पैदा होने वाले पिल्ले को पहले दूध छुड़ाने और अन्त में पैदा होने वाले को क्रम से दूध छुड़ाने की प्रक्रिया अपनाना चाहिए, जो कहीं कहीं अपनाई जाती है जबकि अन्य अज्ञानतावश तथा अभावों के कारण इस प्रक्रिया को नहीं अपना पाते है।

दूध पिलाने की प्रक्रिया में मादा सूकर बहुत कमजोर हो जाती है जिससे इनकी पसलियां भी दिखने लगती है।

सूकर पालक इन सूकर पिल्लों को जवान होने तक पालने में असमर्थ होते हैं जिसके चार कारण समझ में आते हैं :–

- सूकर आहार पर इनकों पालना उनके लिए एक कठिन कार्य है।
- सूकरों को बाहर छोड़ने पर वे खेतों में खड़ी फसल को नुकसान पहुँचाते हैं, जो आर्थिक हानि के साथ साथ झगड़े का कारण भी बनता है।
- खुला छोड़ने पर कुत्तों एवं अन्य पशुओं द्वारा क्षति एवं गुम या चोरी होने की संभावना रहती है।
- गंदा पानी या चोट लगना उनकी मृत्यु का कारण बनता है।
- समझ–बूझ की कमी के कारण साफ–सफाई की कमी रहती है। हालांकि सूकर की नस्लें के अनुसार साफ–सफाई का ध्यान रखते है।

छ.ग. में सूकर की नस्ल

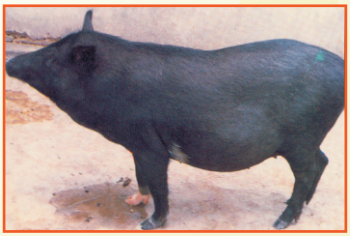

देशी सूअर की मुख्य नस्ल जो यहां पाई जाती है, उसके मुख्य लक्षण इस प्रकार हैं :–

1. पेट बड़ा और जमीन की ओर लटका हुआ रहता है।
2. इनका वजन विदेशी और क्रॉस सूकरों की नस्लों की अपेक्षा कुछ कम होता है।
3. प्रायः काले रंग के होते है।
4. चेहरा लम्बा होता है और जबड़ा कानों की ओर काफी पीछे तक फैला हुआ रहता है।
5. पीठ पर बहुत कम मांस और चर्बी होती है क्योंकि प्रायः पेट में नीचे की ओर उतर जाती है।

6. बच्चे देने की उम्र जल्दी आ जाती है, लगभग 6 से 8 माह के बीच जवान हो जाती है।
7. वर्ष में दो बार बच्चे देती है।
8. नर सूकर, मादा की अपेक्षा और जल्दी प्रजनन योग्य हो जाता है।
9. कुछ सूकरों की पीठ पर भूरे रंग की लम्बी धारियां पाई जाती है, जो उसकी संबंधी पूर्वजों के जंगली होने का संकेत है।
10. कुछ सूकर संकर नस्ल के भी मिलते हैं जिनमें लार्ज व्हाईट यार्कशायर एवं देशी दोंनो के गुण पाये जाते हैं। सड़क किनारे के गांवो में इस तरह की संख्या अधिक है।
11. लार्ज व्हाईट यार्कशायर एवं मिडिल व्हाईट यार्कशायर के सूकर, जो शासकीय योजनाओं में प्रदाय किये गये हैं वे भी मिलते है।

छ.ग. में विदेशी नस्ल के सूकर

आज की स्थिति में बिना विदेशी नस्ल के रक्त के कोई सूकर नही रह गया है। हालांकि छ.ग. के आदिवासी पहले भी और अब भी देशी काले सूकर को ही पसंद करते हैं।

संकर नस्ल के सूकरों की बीमारियों के प्रति पतिरोधक क्षमता कम होती है। ग्रामीण परिस्थितियों में इनकी मृत्यु दर भी अधिक है। विदेशी नस्ल के सूकरों में जुंए, पेट के कृमि होने तथा घाव होने पर समय पर ईलाज नहीं होने पर सूकर के ठीक होने की संभावनाएं कम होती है।

स्वाइन फीवर (सूकर ज्वर) नाम की बीमारी का भय रहता है। संकर नस्ल के नर सुकर आहार की अधिक आवश्यकता एवं कम उपलब्धता के कारण धान के खेतों को नुकसान पहुँचाते हैं। ग्रामीाण परिस्थितियों में सूकर पालन के लिए यह भी एक नाकारात्मक बिन्दु हैं। अधिक शारीरिक भार, अधिक वृद्धि दर एवं आहार को मांस में बदलने की तेज क्षमता – विदेशी नस्ल के सूकरों के पालन के लाभ हैं जबकि छ.ग. में पारम्परिक सूकर पालन में यह संभव नही हो पाता जहां आहार के नाम पर कोंढ़ा एवं कुटकी को जुठन के साथ मिलाकर थोड़ी मात्रा में खिलाने का प्रचलन है।

आदिवासी परिवारों में नर सूकर को खिलाना लाभदायक नहीं माना जाता । विदेशी नस्ल के नर सूकर भारी और बड़े होते है, जो देशी नस्ल की छोटी–छोटी मादाओं से समागम के लिए उपयुक्त नहीं होते। देशी मादा भागने में तेज होती है जबकि विदेशी नर बहुत धीमा होता है। अतः वह गर्मी में होने के बाद भी मादा को पकड़ नहीं पाता।

चूकि नर को आहार कम दिया जाता है। अतः वह धीरे–धीरे कमजोर हो जाता है तथा प्रजनन योग्य नही रहता ।

विदेशी सूकर अपने शरीर भार का एक किलो मांस बनाने के लिए 1.8 से 2.0 किलो तक सांद्र आहार खाता है, जबकि देशी सूकर 3.5 किलो तक सांद्र आहार खाता है।

चूंकि ग्रामीण परिवेश में साफ सफाई व देखरेख बहुत अच्छे तरीके से संभव नहीं है ऐसी परिस्थितियों में भी देशी सूकरों में प्रजनन क्षमता व बीमारियों से लड़ने की क्षमता अधिक होती है। इसलिए तुलनात्मक रूप से अधिक उत्पादन देना भी उनके लिए सम्भव होता है।

3. सूकर पालन कला

घूमते हुए सूकर और उन पर काबू पाना–

सूकर का आकार एवं बनावट, उसकी स्वतंत्र प्रवृत्ति, पैने दांत, नाखून, बल आदि के कारण सूअर पर काबू पाना कठिन है।

गांवों में सूकरों का नियंत्रित करने हेतु कोने की ओर हांक कर, झटके से पिछले पैरों को एक हाथ से पकड़ कर उठायें फिर एचलिस नाम की नस को दबायें, उसके बाद टॉगों के सहारे से सुकर को इतना उठायें कि अगले पैरों की पकड़ जमीन से छूट जाये, तब वह अपने आप को असहाय महसूस करता है। पिछली टॉगों को मरोड़ कर बांध दें। उसी समय दूसरा व्यक्ति आगे और पीछे की टांगों के बीच में एक 6 इंच चौड़ा पाइप फंसायें। यदि आवश्यक हो तो उसके पैरों और गर्दन के बीच मे भी एक बांस फंसाया जा सकता है।

सूकरों को एक–एक की अपेक्षा समूह में घुमाने, ले जाना उचित है। सूकर पर छड़ी का उपयोग, उपयोगी सिद्ध नहीं होता , क्योंकि पीठ पर मोटी त्वचा और चर्बी की मोटी परत होती हैं, अतः ताकि सूकर उत्तेजित न हो। उत्तेजित और क्रोधित सूकर को पकड़ना असम्भव न भी हो तो बहुत कठिन अवश्य हो जाता है।

प्रसव प्रकिया–

छ.ग. के गांवों में कई परिवार सूकर पिल्लों की बिक्री से अपनी आजिविका चलाते है। सूकर पिल्लों से होने वाली आय एक मादा द्वारा जल्दी–जल्दी प्रसव होने, एक प्रसव में पिल्लों की संख्या, उनकी जिन्दा रहने की दर और विक्रय के समय तीव्र वृद्धि पर निर्भर करती है।

सुविधाएं–

प्रसव के समय की सुविधाएं साधारण एवं कम खर्चीली होनी चाहिए। जैसा कि हम जानते है कि नवजात पिल्ले बहुत सी बीमारियों के प्रतिग्राही होते हैं । अतः प्रसव का स्थान उपयोग के पूर्व अच्छी तरह साफ किया जाना चाहिए। वहां इस तरह की रचना होनी चाहिए कि भारी भरकम शरीर की मादा सूकर पिल्लों के ऊपर न लेट पाये। चार खूंटों को चारों कोनों में इस प्रकार गाड़ने से कि मादा सूकर के लेटने के बाद पिल्लों को कोने में बैठने के लिए जगह बची रहे, इस दुविधा को कम किया जा सकता है।

प्रसव गृह को फिनाइल आदि की सहायता से कीटाणु रहित कर दिया जाना चाहिए। यदि सर्दियों के दिन हैं और फर्श ठण्डा हो तो, भूसा कुट्टी आदि को नीचे बिछा दिया जाना चाहिए। ताकि ठंडक से से मादा सूकर और पिल्लों की बचत हो सकें।

विदेशी नस्ल की मादा का प्रसव पूर्व प्रबंधन–

संभावित प्रसव तिथि के दो हफ्ते पूर्व पेट के कृमियों की दवा डॉक्टर की सलाह से पिला देना उचित होता है।

मादा सूकर की त्वचा और बालों के बीच पेट के कीड़ों के अण्डे, जुएं, लीखें, कीटाणु, धूल आदि चिपके रहते हैं। इनसे मुक्त करने के लिए लगभग चार से पांच दिन पूर्व हल्के गर्म पानी में साबुन व डिटोल आदि से नहलाना चाहिए। उसके बाद ही स्वच्छ प्रसव स्थान पर मादा को रखना चाहिए। 2–3 दिन पूर्व से आहार की मात्रा को घटा देना चाहिए। आहार तैलीय, हल्का व चिकना हो और उसमे कोढ़ा की मात्रा अवश्य होनी चाहिए।

प्रसव के पूर्व संकेत–

1. लगभग 24 घण्टे पूर्व मादा अशांत व बेचैन हो जाती हे।
2. लगभग 8–16 घण्टे पूर्व थनों से दूध झलकता दिखाई पड़ता है।
3. लगभग 5 घण्टे पूर्व उपलब्ध साधनों से मादा सूकर एक घोसले जैसी आकृति बनाना प्रारंभ करती है।
4. लगभग 3 घण्टे पूर्व पेट के संकुचन के कारण हलचल ऊपर से महसूस की जा सकती हैं
5. लगभग 2 घण्टे पूर्व रक्त मिश्रित तरल पदार्थ योनि से टपकना प्रारंभ हो जाता है।

प्रसव के समय एवं प्रसवोत्तर प्रबंधन–

मादा सूकर के प्रसव के समय ध्यानपूर्वक देखते रहने की आवश्यकता होती है ताकि मादा या पिल्लों को सहायता की, आवश्यकता होने पर हम उन्हें सहयोग दे सकें।

मादा सूकर के द्वारा पिल्लों को किसी भी तरह का नुकसान होने से बचाना चाहिए। कुछ नई उम्र की मादायें अपने ही पिल्लों के प्रति प्रसव के दौरान दुष्टतापूर्ण व्यवहार करती है। प्रसव के दौरान क्रमशः पिल्लों को वहां से हटाते जाना चाहिए। पूरी प्रसव प्रक्रिया पूर्ण होने के कुछ देर बाद मादा शांत हो जावे, फिर वह आसानी से पिल्लों को स्वीकार कर लेती है।

बाहर निकलते समय कठिनाई आने पर पिल्लों को सहारा देकर निकाल लेना चाहिए।

मादा को पिल्लों के ऊपर लेटने से बचाना चाहिए।

कमजोर पिल्लों को बाहर से दूध आदि पिलाना उचित होगा।

जहां प्रसव स्थल की स्वच्छता के कायम रहने पर संदेह हो एवं संक्रमण की सम्भावना हो तो, पिल्लों के नाल काटने के बाद नाभि पर 15 प्रतिशत टिंचर आयोडिन का घोल रूई की सहायता से लगा देना चाहिए।

प्रायः अधिक उम्र की मादा सूकर बिना किसी समस्या के प्रसव पूर्ण करती है। प्रसव के दौरान मादा सूकर को कम से कम व्यवधान देना चाहिए। बहुत अधिक आवश्यक यदि न हो तो प्राकृतिक प्रसव होने देना चाहिए।

प्रसव के बाद मादा को भी शांत रहने देना चाहिए। आहार की मात्रा एवं सांद्रता भी धीरे–धीरे बढ़ाई जाना चाहिए। जब वह पूर्ण आहार पर आ जाये तो पिल्लों को दूध पिलाने के लिए भी अतिरिक्त सान्द्र आहार देना चाहिए।

पिल्ला पोषण कला–

जैसे ही पिल्लों का जन्म हो, उन्हे मादा सूकर की पहुंच के बाहर हल्के गर्माहट वाले घोंसले में रखना उचित होता है। माँ के दूध के अतिरिक्त उन्हे आयरन सप्लीमेन्ट की भी आवश्यकता होती है। नाल आदि को काटने, और पिल्लों को साफ करने से उत्पन्न होने वाली आवाज से मादा सूकर क्रोधित हो सकती है। अतः इस प्रकार की प्रक्रिया मादा सूकर से दूर रखकर पूरी होनी चाहिए। तथा मादा सूकर को वहां अकेला ही रखा जाना चाहिए। सूकल पिल्ले बहुत ही जिज्ञासु प्रावृत्ति के होते हैं। वे सात दिनों के बाद ही आहार (दूध के अलावा) को सूंघना एवं मुंह में डालना प्रारंभ कर देते हैं, और दो या तीन सप्ताह में तो वे आहार की पर्याप्त मात्रा का उपयोग करना प्रारंभ कर देते हैं। उन

परिस्थितियों में जबकि एक मादा द्वारा जन्म दिए बच्चों की संख्या बहुत अधिक हो, मादा कमजोर हो, बीमार हो, तब तीसरे हफ्ते के बाद से पिल्लों को क्रीपर राशन (पिल्लों का आहार) दिया जाना अति आवश्यक हो जाता है।

यह देखा गया है कि क्रीपर राशन खिलाए जाने वाले पिल्लों की वृद्धि 20 प्रतिशत तेजी से होती है। प्रोटीन युक्त आहार से भी पिल्लों के भार में वृद्धि तेजी से होती है।

सूकर पिल्लों को दाना ऐसी जगह रखकर खिलाना चाहिए कि वहां बड़े सूकर आकर उन्हे व्यवधान न दे सकें। उस स्थान पर सर्दियों के मौसम में ऊष्मा का प्रबंध होना चाहिए, जिससे पिल्लों के द्वारा आहार की अधिक मात्रा उपयोग में लाई जाती है।

पांच से आठ हफ्ते के बीच की किसी भी उम्र में पिल्लों को मां का दूध छुड़ाया जा सकता है। गांव की परिस्थितियों में दूध छुड़ाया जाना संभव कम होता है। आठ हफ्ते के बाद मादा सूकर का दुग्धोत्पादन स्वतः ही बहुत कम हो जाता है। तब तक पिल्ले भी आहार उपयोग करने लगते हैं। दूध छुड़ाने के एक हफ्ते बाद पिल्लों को पेट के कृमि की दवा देनी चाहिए।

सूकर पिल्लों का रख–रखाव एवं लौह तत्व की आपूर्ति–

सूकर पिल्लों की वृद्धि बहुत तेज होती है। 20 दिन की उम्र में जन्म के समय का दो से तीन गूणा वजन हो जाता है इस वृद्धि के कारण उनके रक्त का आयन भी उसी अनुपात में बढ़ता है, इस कारण हीमोग्लोबीन नाम पदार्थ जिसका मुख्य घटक लौह तत्व होता है, बढ़ता है जो बाहर से लौह तत्व की आपूर्ति की मांग करता है। परीक्षणों से यह पता लगा है 2–3 हफ्ते की आयु तक पिल्लों को प्रतिदिन लगभग 7 मिलीग्राम लौह तत्व आवश्यकता होती है। जन्म के समय पिल्ले के शरीर में लगभग 4.5 मिलीग्राम लौह तत्व होता है। और मां के दूध से 1.0 मिलीग्राम प्रतिदिन मिलता है, अतः बाहर से लौह तत्व की आपूर्ति की आवश्यकता होती है। जिसके अभाव में आठ दिन के अंदर ही इसकी कमी के लक्षण दिखने लगते हैं। कमजोरी, बालों की रूखापन, गर्दन, पैर, कंधों की त्वचा का झुर्रियां, म्यूकस झिल्ली में पीलापन, सुस्ती, दस्त लगना, बीमारियों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता की कमी और एकाएक मृत्यु इस बीमारी के लक्षण हैं।

यह एक तथ्य साबित हो चुका है कि पिल्लों को लौह तत्व की बाहर नियमित खुराक आवश्यक है, जो कई तरह से पूर्ति की जा सकती है :–

1. वर्षा ऋतु में यदि घास के मैदान में पिल्ले विचरण करते हैं तो जमीन में घुसी जड़ों के साथ उन्हें लौह तत्व की पूर्ति अपने आप होती रहती है।
2. आयरन पेस्ट को आहार द्वारा भी तीसरे और दसवें दिन दिया जा सकता है।
3. फेरस सल्फेट (हरा थोथा) का घोल पिल्लों की मां के थन पर प्रतिदिन लगा देने से भी काम चल सकता है, जिसे दस लीटर गर्म पानी में 500 मिलीग्राम फेरस सल्फेट तैयार किया जा सकता है।
4. 100 मिलीग्राम आयरन इम्फेरान इंजेक्शन के साथ में एक ही पूर्ण खुराक दी जा सकती है। यह थोड़ा मंहगा किन्तु सर्वोत्तम तरीका है। हालांकि यह महत्वपूर्ण नहीं है कि लौह तत्व किस प्रकार दिया गया है। अधिक महत्वपूर्ण यह है कि समय पर प्रत्येक पिल्ले को आयरन पर्याप्त मात्रा में मिल जाना चाहिए।

4. आवास व्यवस्था

किसानों की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने हेतु सूकर पालन का महत्व दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। इसके कई कारण हैं–

1. सूकर पालन प्रारंभ करने के कुछ ही दिनों बाद आर्थिक लाभ प्राप्त होने लगता है।
2. सूकर बहुत शीघ्रता से उपलब्ध आहार को जो प्रायः प्रति उत्पाद होता है, शरीर वृद्धि में उपयोग करते हैं और मांस उत्पादन में तेज वृद्धि करते हैं।
3. सूकर पालन व्यवसाय हेतु बहुत धन की आवश्यकता नहीं होती।
4. सूकर की प्रजनन क्षमता अधिक होती है।
5. सूकरों का आवास प्रबंधन सस्ता होता है।

सूकरों के व्यवसाय में अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त करने हेतु यह सुनिश्चित करना अति आवश्यक है कि उनकी आवास व्यवस्था को वैज्ञानिक रूप से संयोजित किया जाए। आवास व्यवस्था का मूल उद्देश्य यह होना चाहिए कि सूकरों को–

1. पर्याप्त आराम मिल सके।
2. उनको स्वच्छ आहार एवं पानी बिना व्यवधान के मिल सके।
3. सूकरों का निरीक्षण आसानी से हो सके।
4. आवासीय स्वच्छता कम खर्चीली तथ अधिक सुविधाजनक हो।
5. रोगों के उपचार की आवश्यक सुविधा हो।
6. प्रजनन तथा प्रसव सुचारू रूप से हो सके।
7. वातारण व खराब मौसम के प्रभाव से सूकरों को बचाया जा सके।

सूकर बाड़े–

सूकरों को उनके शारीरिक गठन, लिंग, आयु के आधार पर विभिन्न प्रकार के आवासों (बाड़ों) में रखा जाता है। आमतौर तौर पर तीन प्रकार के बाड़े बनाए जाते हैं।

1. खुले बाड़े
2. बंद बाड़े
3. मिश्रित प्रकार के बाड़े

बाड़े बनाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बाड़ों का आकार, सूकरों की संख्या व उम्र के अनुसार हो। सूकर घर (बाड़े) में ऐसी कोई इकाई, यंत्र या संरचना न हो जिससे कि सूकरों को चोट लगे अथवा किसी प्रकार की क्षति हो सके। आवास इस प्रकार से नियोजित करना चाहिए कि अंदर का तापमान 25 डिग्री से.ग्रे. बना रहे।

1. खुले बाड़े–

खुले बाड़ों में सूकर मुख्य रूप से विचरण कर सकते हैं। खुले बाड़ों को छायादार जगह पर निर्मित किया जाता है और वर्षा, गर्मी व ठण्ड के विपरीत मौसम में उन्हें स्वस्थ रखने की व्यवस्था करनी पड़ती है। सूकर चारागाहों में इस प्रकार चरते हैं कि उनसे पूरे चारागाहों को हानि न पहुंचे। पूरा दिन चारागाह में बिताने के बाद रात्रि विश्राम हेतु स्वयं ही पशुगृह में आ जाते हैं। खुले बाड़े कम खर्चीले होते हैं। खुले सूकर बाड़े में स्वच्छता आदि पर कम खर्च करना पड़ता है साथ ही सूकर को पर्याप्त व्यायाम, सूर्य का प्रकाश व स्वच्छ वायु भी उपलब्ध हो जाती है। किन्तु खुले सूकरों को संतुलित व नियंत्रित आहार नहीं मिल पाता तथा वातावरण भी प्रदूषित होने की संभावना बढ़ जाती है, जिसके कारण प्रजनन व स्वास्थ्य संबंधी मुश्किलें बढ़ जाती है। इस प्रकार के बाड़े ज्यादा स्थान घेरते हैं अतः उत्तम नस्ल के सूकरों के लिए यह उपयुक्त नहीं है।

2. बंद बाड़े–

बंद बाड़ों का प्रयोजन सूकरों को अति नियंत्रित, कुशल प्रबंधन तथा सुरक्षित वातावरण में रखना है। बंद बाड़ों में अंदर ही उनके खाने–पीने की समूचित व्यवस्था की जाती है। सूकर की जाति व लिंग के आधार पर बाड़ों का आकार निश्चित किया जाता है। आजकल व्यवसायिक स्तर पर इस प्रकार के आवासों पर अधिक बल दिया जा रहा है।

3. मिश्रित बाड़े–

प्रायः इस प्रकार के बाड़ों को सूकर पालन हेतु प्राथमिकता दी जाती है। इसमें सूकरों को कुछ समय तक बंद बाड़ों में तथा कुछ समय खुले बाड़ों में रखा जाता है। बाड़ों के खुले भाग में कई सूकरों के लिए अथवा एक–एक सूकर के लिए व्यवस्था की जाती है।

सूकर गृह के विभिन्न भाग–

आधुनिक सूकर पालन हेतु गृह में प्रत्येक आयु तथा सभी प्रकार के सूकर हेतु अलग–अलग प्रकार के सूकर गृह की आवश्यकता होती है। प्रत्येक सूकर आवास को स्टाई अथवा गृह या बाड़ा कहते हैं। ये बाड़े पुनः कई छोटे–छोटे खण्डों में विभाजित किए जाते हैं जिन्हें पैन या उप बाड़ा कहते हैं। अधिकांश सूकर पालक निम्न प्रकार के बाड़े तथा उप–बाड़े सूकर गृह बनाते हैं :–

1. नर सूकर बाड़ा
2. मादा सूकर बाड़ा
3. बच्चा देने वाली सूकरी का बाड़ा
4. मांस हेतु सूकर पालन का बाड़ा
5. बीमार सूकर हेतु बाड़ा
6. शिशु सूकर बाड़ा

इनमें क्रमशः 24, 40,40,20 व यथोचित संख्या में उप–बाड़े बनाये जाते हैं।

भारतीय मापदण्डों के अनुसार हर उप–बाड़े में एक ढ़के क्षेत्र तथा खुले क्षेत्र का माप तालिका नं. 1 में वर्णित है।

तालिका नं. 1
सूकर पालन हेतु स्थान की आवश्यकता

सूकर (प्रकार)	ढ़का क्षेत्र(मी.^{2})	खुला क्षेत्र (मी.^{2})
नर सूकर	6.25–7.25	
मादा सूकर	1.8–2.7	8.0–12.0
बच्चा देने वाली सूकरी	7.5–9.0	

आवास का निर्माण–

सूकर आवास के प्रत्येक भाग को सावधानी पूर्वक उनकी आवश्यकताओं के अनुसार निर्माण कराया जाना चाहिए।

फर्श–

सूकर आवास का फर्श मजबूत होना चाहिए क्योंकि कमजोर फर्श को सूकर अपने थूथन द्वारा तोड़कर गड्ढ़ा बना देते है। अतः फर्श कंकरीट–सीमेंट का बना होना चाहिए। फर्श खुरदरा भी होना चाहिए क्योंकि चिकने फर्श पर सूकर के गिरने या उसे चोट लगने का खतरा सदैव बना रहता है। सूकर गृह का फर्श पत्थर का बना हो तो भी अच्छा रहता है।

भोजन व जलकुण्ड–

सूकर की लार से सामान्य बनावट वाले भोजन व जलकुण्ड गल कर क्षति ग्रस्त हो जाते है। अतः इनको भी मजबूत कंकरीट सीमेंट से ही निर्मित करना चाहिए। इन कुण्डों के कोने गोलाई लिए हुए निर्मित कराना चाहिए, जिससे सफाई में आसानी रहे, अन्यथा गंदगी के बने रहने की संभावना रहती है।

दीवार–

सूकर गृह की दीवार भी मजबूत होनी चाहिए। क्योंकि सूकर एक शक्तिशाली पशु है। ईंट या पत्थर से बनी दीवार मजबूती प्रदान करती है।

दीवारों को 1–1.5 मीटर ऊंचाई तक चिकने सीमेंट से निर्मित करना चाहिए जिससे उन्हें साफ करने मे आसानी हो। 1 से 1.5 मीटर से ऊपर की दीवार लोहे के पाईपों का प्रयोग कर निर्मित कर सकते है। इसके अतिरिक्त दीवारों के कोने गोलाई लिए होने चाहिए। इस प्रकार गोलाई लिए हुए कोने वाली दीवार को साफ करना आसान होता है।

छत –

सूकर गृह की छत ऐसी निर्मित होनी चाहिए कि वह धूप, वर्षा तथा खराब मौसम से बचाव कर सकने में सक्षम हो। फर्श से छत की ऊंचाई लगभग 3 मीटर होना चाहिए। जिससे मौसम बदलने का प्रभाव सूकर गृह के अंदर कम हो। प्रायः छत एसबैस्टस से बनाई जाती है, सीमेंट–कंकरीट से भी बना सकते हैं।

मध्य मार्ग–

विभिन्न सूकर आवासों के मध्य का मार्ग इस प्रकार निर्मित होना चाहिए कि सूकर की देख रेख हेतु तथा श्रमिकों को सामान लाने ले जाने में सुविधा हो। मध्य मार्ग को स्वच्छ रखना भी आसान होना चाहिए। अतः मध्य मार्ग को कम से कम 1 लीटर चौड़ा सीमेंट का बना होना चाहिए तथा सूकर आवासों के उत्सर्जन कक्ष की ओर ढ़लान लिए हुए बनाना चाहिए। मध्य मार्ग का फर्श व दीवार भी ढलान लिए हुए बनी होनी चाहिए।

निकासी–

सूकर आवास के प्रत्येक गृह में मल–मूत्र तथा अन्य प्रकार के कूड़े–कचरे सूकर पालन पोषण के दौरान निकलते हैं। उन्हें उत्सर्जन हेतु सूकर आवासों के अन्तिम बाहरी हिस्सें में एकत्र करने हेतु प्रत्येक सूकर गृह निकास नाली की व्यवस्था होती है। प्रत्येक सूकर गृह की छोटी–छोटी निकास नालियां एक मुख्य निकास नाली में मिलती हैं जो मध्य मार्ग के साथ–साथ बनाई जाती है, जिससे होकर सूकर गृहों का कचरा उत्सर्जन कुण्ड में एकत्र होता है। प्रत्येक निकास नाली गोलाई लिए हुए बनाई जानी चाहिए तथा इसका ढलान उपयुक्त होना चाहिए।

प्रजनन हेतु सूकर गृह में प्रत्येक 10 मादा सूकरियों पर एक नर सूकर को रखा जाता है। अन्तःप्रजनन रोकने के लिए नर सूकरों को समय–समय पर किसी अन्य सूकर फार्म से लेकर बदलते रहना चाहिए। प्रजनन का निर्धारण इस प्रकार करना चाहिए कि हर 2–3 माह में तीन मादा सूकर बच्चे दे सकें।

बच्चों को दो माह बाद मादा से अलग कर दिया जाता है। प्रायः मादा को प्रजनन बाड़े से हटाते हैं जिससे शावकों को वातावरण में परिवर्तन न लगे। प्रत्येक सूकर फार्म पर आवश्यकता अनुसार गर्भित सूकरी के प्रजनन बाड़े होने चाहिए। 6 गर्भित सूकरियों का समूह बनाकर उन्हें एक पशु गृह में रखा जा सकता है। मांस के लिए उपयुक्त सूकरों का वध 6–8 महीनें में कर दिया जाता है। एक साधारण सूकर गृह में करीब 36 उप–बाड़े(कक्ष) मांस हेतु रखे जाने वाले सूकरों के लिए होने चाहिए। प्रत्येक सूकर गृह का नियमित रूप से निरीक्षण होना चाहिए तथा रोगी सूकरों का परीक्षण व उपचार तत्परता से किया जाना चाहिए।

5. आहार व्यवस्था

सूकर पालन व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य मांस उत्पादक पशुओं में सर्वाधिक बढ़ोतरी सूकर में ही होती है अतः आज सूकर–पालन वृहद स्तर पर अपनाया जाकर, उसके मांस का व्यावसायिक उपयोग किया जा रहा है।

सूकर एक ऐसा पशु है जो अन्य पशुओं हेतु अनुपयोगी खाद्य पदार्थों को उपयोग में लाकर, उत्तम किस्म के पौष्टिक मांस में परिवर्तित कर देता है। सूकर–पालन व्यवसाय में बच्चे से लेकर मांस हेतु वयस्क सूकर तैयार होन तक खर्च का 70–75 प्रतिशत आहार पर व्यय होता है अतः सूकर आहार सन्तुलित होने के साथ–साथ सस्ता भी होना चाहिए, जिससे सूकर–पालक इस व्यवसाय में अधिक लाभ कमा सके। सूकर अत्यंत तीव्र गति से वृद्धि करके कम समय में काफी अधिक मात्रा में पौष्टिक मांस उत्पन्न कर सकता है। इसलिए उसे अच्छी गुणवत्ता वाले प्रोटीन एवं अधिक ऊर्जायुक्त पाचनशील आहार की आवश्यकता होती है।

सूकर को उसकी आयु, विकास के स्तर एवं मांस उत्पादन के अनुसार निम्न प्रकार से आहार व्यवस्था करनी चाहिए जिससे वे कम से कम समय तथा व्यय में मांस तैयार हो सकें।

सूकर के बच्चों को पैदा होते ही माँ का दूध (कोलेस्ट्रम) अवश्य देना चाहिए। कोलेस्ट्रम बच्चे के शरीर में पहुंच कर रोगों से बचाने हेतु प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न करता है। तीन–चार दिन बाद जब कोलेस्ट्रम निकलना बन्द हो जाये तब भी मॉ का दूध देते रहना चाहिए। इसके बाद सात दिन की उम्र पर सूकर के बच्चों को क्रीप आहार देना शुरू कर देना चाहिए जिससे दूध छुड़ाने की अवस्था तक वे पर्याप्त मात्रा में आहार खाने लगें। सूकर को उसके वजन के अनुसार विभिन्न प्रकार के आहार जैसे क्रीप आहार, स्टार्टर आहार, ग्रोअर एवं फिनिशर आहार की आवश्यकता होती है। सूकर पालक स्थानीय रूप से उपलब्ध अच्छे खाद्य–पदार्थों को उपयोग में लाकर सस्ता व सन्तुलित आहार बना सकते है।

क्रीप आहार–

यह उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन, खनिज, विटामिन्स, एन्टीबायोटिक्स एवं उच्च ऊर्जा युक्त होना चाहिए। इसमें 20 प्रतिशत क्रुड प्रोटीन, 3500 किलो कैलोरी ऊर्जा एवं रेशे की मात्रा अन्यन्त कम होनी चाहिए क्रीप–आहार विभिन्न खाद्य–पदार्थों को मिलाकर निम्न प्रकार से तैयार किया जा सकता हैः–

आहार घटक	मात्रा	आहार घटक	मात्रा
स्किम्ड मिल्क	10 %	पिसी हुई मक्का	40 %
मूंगफली की खली	10 %	गेंहू का चोकर	10 %
शीरा	10 %	तिल की खली	10 %
ब्रीवर्स यीस्ट	02 %	मछली का चूरा	06 %
विटामिन मिश्रण	10 ग्राम	खनिज मिश्रण	02 %

पक्के फर्श पर रहने वाले सूकर के बच्चों को थम्प्स (पिगलेट एनीमिया / रक्ताल्पता) होने की अत्यन्त सम्भावना होती है। अतः इन्हे 2 सप्ताह की उम्र पर बाहर से लौह तत्व की आपूर्ति की जानी चाहिए।

स्टार्टर आहार–सूकर बच्चों का वजन 10 किलोग्राम हो जाने पर स्टार्टर आहार देना प्रारंभ कर देना चाहिए। स्टार्टर आहार में 22 प्रति. क्रूड प्रोटीन, 3500 किलो कैलोरी पचनीय ऊर्जा एवं रेशे की मात्रा कम होनी चाहिए. इसका नमूना निम्न है :–

आहार घटक	मात्रा	आहार घटक	मात्रा
1. मक्के का दलिया	58 %	4. गेंहूँ का चोकर	10 %
2. मूंगफल्ली की खली	20 %	5. मछली का चूरा	10 %
3. खनिज मिश्रण	02 %	6. विटामिन मिश्रण	10 ग्राम

ग्रोअर आहार–20 से 50 किलोग्राम वजन वाले सूकर को ग्रोअर आहार देना चाहिए। ग्रोअर आहार में 18 प्रति फूड प्रोटिन एवं 3300 किलो कैलोरी पचनीय ऊर्जा होनी चाहिए। यह आहार दो प्रकार के हो सकते है।

अनाज युक्त ग्रोअर आहार		अनाज रहित ग्रोअर आहार	
1. मक्के का दलिया	50 %	1. गेंहूँ का चोकर	70 %
2. गेंहूँ का चोकर	40 %	2. मूंगफल्ली की खली	20 %
3. मछली का चूरा	08 %	3. मछली काचूरा	6.5 %
4. खनिज मिश्रण	02 %	4. नमक	0.5 %
5. विटामिन मिश्रण	10 ग्राम	5. खनिज मिश्रण	02 %
		6. विटामिन मिश्रण	10 ग्राम

फिनिशर आहार–सूकर के व्यस्क हो जाने पर उसे प्रोटीन की आवश्यकता कम होती है। इस वर्ग के सूकर में वसा एकत्र न हो इसलिए आहार की मात्रा 25 प्रतिशत कम कर देनी चाहिए क्योंकि कम वसा–युक्त मांस उपभोक्ता द्वारा पसंद किया जाता है। इस व्यवस्था में सूकर के शारीरिक वजन पर नियंत्रण हेतु रेशे–युक्त आहार अधिक देना चाहिए, जिससे भार वृद्धि तो होगी परन्तु मांस में वसा कम व प्रोटीन अधिक होगा जिसकी मांग उपभोक्तओं में सर्वाधिक होगी। फिनीशर आहार निम्न प्रकार से तैयार किया जा सकता है।

आहार घटक	मात्रा
1. मक्के का दलिया	40 %
2. गेंहूँ का चोकर	23 %
3. चावल का चोकर	17 %
4. मूंगफल्ली की खली	12 %

5. मछली का चूरा	5.5 %
6. खनिज मिश्रण	2.5 %
7. विटामिन मिश्रण	10 ग्राम

यदि दलहनी हरा चारा उपलब्ध हो तो सूकर आहार पर होने वाले खर्च को अत्यन्त कम किया जा सकता है क्योंकि इससे मिलने वाले पोषक तत्व काफी सस्ते होते हैं। सूकर की पसंद के मुख्य दलहनी चारे बरसीम एवं लूसर्न हैं। वयस्क सूकर को 3–5 किलोग्राम तक हरा चारा खिला सकते है।

सन्तुलित आहार के साथ–साथ सूकर को पर्याप्त मात्रा में स्वच्छ, ताजा पानी उपलब्ध कराना चाहिए।

6. बीमारियों से बचाव

आदिवासी गांवों मे प्रायः बीमारियों का कारण देवी–देवताओं एवं आत्माओं के कोप को समझा जाता है। गुनिया और ओझा आदि के सुझाव पर उनके उपचार हेतु मुर्गा, सूकर, कबूतर आदि की बलि पर धन व्यय किया जाता है।

विभिन्न बीमारियों के लक्षण, बचाव के उपाय, उपचार आदि के विषय में आधारभूत जाकारी उन्हे साधारण भाषा में दी जाने की आवश्कता है।

जिस तरह से अब मनुष्यों की चेचक एवं हैजा बीमारियों को समझ कर टीकाकरण कराया जाता है उसी तरह सुअरों की इन बीमारियों की जानकारी हो जाने पर पशुपालन स्वमेव टीकाकरण करायेंगे और उसमे सहयोग करेंगे। सूकर पिल्लों में मृत्युदर लगभग 30 प्रतिशत है जो कि प्रायः उनकी मॉ के भारी भरकम शरीर के ऊपर चढ़ जाने, निमोनिया, फर्श गीला होने से, खराब मौसम, दस्त या पिगलेट एनीमिया यानी की खून की कमी तथा पेट के कीड़ों के कारण होती है।

आन्तरिक और बाह्य परजीवी, बीमारियों के लक्षण उनमें बचाव–

सूकर जाति मे होने वाली बीमारियां, जीवाणु, विषाणु और कीटाणुओं द्वारा फैलायी जाती है। सुअरों पर आंतरिक परजीवी जैसे जुएं और लीखों आदि का प्रकोप भी होता है। सूअरों का त्वचा का बारीकी से परीक्षण किये जाने पर बीमार पशु की पहचान आसानी से की जा सकती है। बीमार सूकर मे निम्न लक्षण पाये जा सकते हैं –

1. बीमार सुकर खायेगा ही नहीं या खाने के प्रति अरूचि रहेगी।
2. सांस तेज चलेगी।
3. सांस बीच–बीच में रूकती हुई सी रहेगी, खांसेगा।
4. अनमना तथा शांत रहेगा।
5. सफेद सुकरों की त्वचा पर गहरी लालिमा रहेगी।
6. घबराहट रहेगी और कान नीचे की ओर गिरे हुए से रहेंगे। त्वचा और बालों पर रूखापन रहेगा।
7. खूनी आंव भी लग सकती है।
8. त्वचा पर खुरदरापन रहेगा, जिसे वह रगड़कर खुजलाता रहेगा।

इनमें से कोई भी एक से अधिक लक्षण पाये जाने पर सूकर की बीमारी के लिए गंभीरता से जांच की जानी चाहिए। देर से उपचार की अपेक्षा जल्दी उपचार करना परेशानी एवं आर्थिक हानि दोनों ही बचाता है । जबकि एक बात हमेशा ही ध्यान मे रखना चाहिए कि – उपचार की अपेक्षा बचाव बेहतर होता है।

स्थानीय तौर पर पाये जाने वाले विषाणु एवं जीवाणु द्वारा फैलाई जाने वाली बीमारियों के लिए सुकर प्रायः संवेंदनशील हुआ करते है। अतः तेज बुखार तथा अन्य लक्षणों के मिलने पर तुरंत पशु चिकित्सक से उचित परीक्षण कराया जाना चाहिए।

गोल एवं फीता कृमियों के प्रति भी सुकर अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। गोल कृमियों के संक्रमण से सुकर का वजन घट सकता है। वह आंतरिक रूप से भी कमजोर हो जाता है। श्वांस असाधारण हो जाती है।

जबकि फीताकृमियों के जीवन चक्र का एक विशेष भाग सूकर के शरीर में उत्पन्न होता है, जो कि मनुष्य जाति पर अपना कुप्रभाव दिखातें है। अतः ये इस रूप मे मानव जाति के लिए हानिकारक हैं, इससे बचाव के लिए कुछ उपाय किये जा सकते हैं। जैसे सूकर को मनुष्य का मल खाने से बचाया जावे तथा मृत सुकर के शव को जमीन में गहराई से दबाया जाना चाहिए या जलाया जाना चाहिए।

इन परजीवियों से बचाव के लिए कई यौगिक उपयोग किये जाते हैं, जिनमें से पिपराजीन नामक यौगिक प्रायः उपयोग में आता है।

जुएं, मक्खियॉ तथा अन्य बाह्य परजीवी सुकर की त्वचा में खुजली पैदा करते हैं जिससे वह दीवालों आदि से रगड़कर शांत करना चाहते हैं। कुछ बाह्य परजीवियों की उपस्थिति को देखा नहीं जा सकता, बल्कि त्वचा मोटे और अजीब तरह से उठी हुई होने से पहचाना जा सकता है। इन दोनों ही परिस्थितियों में जुओं के लिए उपयोग होने वाले यौगिकों के घोल में पशु को नहलाना चाहिए।

इस तरह के यौगिकों के मिलने वाले पैकिंग पर मात्रा आदि की जानकारी छपी रहती है, अथवा स्थानीय पशु चिकित्सक से सलाह ली जा सकती है। एक बार नहलाने से यदि काम नहीं चले तो बार–बार इस प्रक्रिया को दोहराया जा सकता है। सुकर के साथ–साथ उनके रहने का बाड़ा भी यदि उसी घोल से धो दिया जावे तो अधिक अच्छा रहेगा

7. सूकरों में प्रमुख विषाणु जनित रोग एवं उनकी रोकथाम

सफल एंव लाभदायक सूकर पालन के लिए यह आवश्यक है कि सूकरों को विभिन्न रोगों से बचाया जाए। सूकरों मे होने वाले विभिन्न रोगों मे विषाणु जनित रोगों का विशेष महत्व है, क्योंकि विषाणु जनित रोगों का उपचार अत्यन्त कठिन होता है। अतः विषाणु रोगों की रोकथाम अतिआवश्यक है। सूकरों के प्रमुख विषाणु जनित रोग निम्नलिखित हैं :–

1. खुरपका – मुंहपका रोग(एफ.एम.डी.)
2. पागलपन(रेबीज)
3. सूकर बुखार(स्वाइन फीवर)

1. खुरपका–मुंहपका रोग (एफ.एम.डी.)–खुरपका– मुंहपका रोग पशुओं का एक भयानक संक्रामक रोग है। यह मुख्यतः गौ–पशु, भेड़ तथा सूकरों में होता है। जंगली पशु–पक्षी, हिरण, लोमड़ी और जंगली सूकर इस रोग को फैलाने में मदद करते हैं। यह विषाणु मुँह, जीभ तथा खुरों के आसपास की त्वचा पर आक्रमण करता है। संक्रमण के स्थान पर छाला या पुटिका बन जाती है। रोगी पशु को बुखार आ जाता है। वह खाना नहीं खाता तथा रोगी पशुओं को बहुत प्यास लगती है। मुँह और पैरों पर छाले दिखाई देते हैं। पैरों में लंगड़ापन शुरू हो जाता है। पशु अक्सर अपने पैरों के बीच के भाग को चाटता है एवं पशु के मुँह से लार टपकने लगती है।

उपचार–रोगी पशु के मुंह को 2 प्रतिशत फिटकरी के घोल या 5 प्रतिशत पोटेशियम परमेंगनेट के घोल से धोना चाहिए। पैरों को 1 प्रतिशत नीला थोथे के घोल से धोना चाहिए। इसके अलावा सुहागा और ग्लीसरीन या सुहागा और शहद को 1 और 7 के अनुपात में मिलाकर जीभ के छालों पर लगाने से पशुओं को दर्द से बहुत राहत मिलती है तथा घाव भरने में बहुत सहायता मिलती है।

पशु के नर्म, आसानी से पचने वाले व ऊर्जा युक्त चारा खाने को देना चाहिए। रोग ग्रसित जानवर को खाने के लिए चावल का मांड़, गेंहूँ का दलिया गुड़ के साथ काफी लाभदायक रहता है।

नियंत्रण—इस बीमारी की रोकथाम के लिए पोलीवेलेंट एफ.एम.डी.वैक्सीन का पहला टीका जन्म के एक माह के अंदर लगा दें। दूसरा टीका एक माह के बाद व उसके बाद 6—6 माह पर टीका लगाते रहना चाहिए। सूकरी के बाड़े के बाहर चूना छिड़क देना चाहिए या बोरी को दो से चार प्रतिशत फॉरमेलीन या चार प्रतिशत सोडियम हाईड्राऑक्साईड के घोल मे भिगोकर पशुओं के बाड़ों के दरवाजों के सामने बिछा दें तथा प्रवेश द्वारा पर 1—2 इंच गहराई तक उपरोक्त घोल भर दें तो बाहर से आने वाले लोगों से यह संक्रमण आने की संभावना कम रहेगी।

2. पागलपन(रेबीज)—पागल पशुओं के काटनें से उत्पन्न होने वाले रोग पागलपन या रेबीज कहलाता है। यह मनुष्य सहित स्तनपान प्राणियों का विषाणुजनित अतिसंक्रामक तथा घातक रोग है जिसमें तांत्रिक लक्षण, पक्षाघात, उग्रपन, लार स्त्रवण, जानवरों एवं मनुष्यों का काटना, पागलपन एवं मृत्यु के लक्षण मिलते हैं। यह रोग एक विषाणु के कारण होता है, जिसे कुत्ते, नेवले, गीदड़ लोमड़ियॉ, बिल्लियॉ तथा भेड़िये फैलते है। रोग का विषाणु पागल जानवर की लार मे रहता है। पागल कुत्ता या अन्य जानवर जब अन्य पशु को काटता है तो विषाणु उसकी लार द्वारा शरीर में प्रवेश कर जाता है। संक्रामित पशु को काटने के कुछ समय बाद (कुछ दिनों से 6 महीने तक) इस बीमारी के लक्षण प्रकट होते हैं। रोग का विषाणु प्रायः तंत्रिकाओं द्वारा ही शरीर में फैलता है। इस रोग के दो रूप देखने मे आते है। एक डम्ब (चुपचाप या शांत रूप) और दूसरा फ्यूरियस (प्रचंड या उग्र रूप)

डम्ब किस्म में पशु चुपचाप रहता है, मुंह से लार गिरता है, जबड़ा लटक जाता है, आवाज बदल जाती है। फ्यूरियस किस्म मे सूकर बेचैन रहता है, हर चीज को काटने का प्रयत्न करता है, सूकर दीवारों से टकराने लगता है, कंठ से

दर्दनाक थर्राने वाला शब्द निकलता है। मुंह से लार व झाग बहता है, आहार चबाने व निगलने मे कठिनाई होने के कारण खाना छोड़ देता है, पशु को पहले कब्ज और फिर दस्त लग सकते हैं। धीरे–धीरे पिछले धड़ को लकवा मार जाता है। मुंह से लार टपकती है और भयानक आवाज निकालती है। तथा एक सप्ताह में मृत्यु हो जाती है।

उपचार–इस रोग से ग्रसित पशु की मृत्यु सुनिश्चित है, उपचार संभव नहीं।

नियंत्रण–

1. रोगी पशुओं को दूसरे स्वस्थ्य पशुओं से बिल्कुल अलग रखें और रोग लक्षण निश्चित होने पर रोगी पशु के शव का उचित रूप से निस्तारण करना चाहिए।
2. पागल पशु के घाव को शीघ्र ही रोगाणु नाशक दवा से साफकर लाल दवा लगानी चाहिए।
3. घाव को कई बार साबुन से धोना चाहिए तथा उसके बाद पानी से खूब धोयें।
4. आवारा कुत्तों तथा जंगली जानवरों को नजदीक नही आने देना चाहिए।
5. रोग से ग्रसित जानवर द्वारा सूकर को काटने पर क्रमशः शून्य दिन, 3 दिन, 7 दिन 14, 28 तथा 90 दिन पर रोग रोधी टीका लगाकर सूकर को बचाया जा सकता है।

3. सूकर बुखार–सूकर बुखार विषाणु द्वारा होने वाली एक अत्यन्त संक्रामक बीमारी है जो कि केवल सूकरों में ही होती है। इस बीमारी के दो रूप होते हैं. एक चिरकालिक और दूसरा अचिरकालिक। चिरकालिक रूप में विषाणु के संक्रमण के पांच से दस दिनों बाद लक्षण आते हैं। इसके प्रमुख लक्षण शावकों में बिना किसी लक्षण के मृत्यु, सूकरों का उदास दिखना, भूख न लगना, गर्दन और पूंछ को नीचे रखकर शांत खड़ा रहना, चलने फिरने की इच्छा न होना, जबरदस्ती चलाने पर पिछले भाग

का झूमना, सूकरों में एक के ऊपर एक इकट्ठा होना, तेज बुखार का होना (40से 41.5 डिग्री.से.) आदि। इसके अतिरिक्त जल्दी पाये जाने वाले लक्षणों में कब्ज के बाद दस्त या उल्टी का होना, शरीर की त्वचा का नीला पड़ना, आंखें लाल होना और सूजन तथा तंत्रीय लक्षणों में सूकर का गोलाई मे घूमना, लड़खड़ाना, मांसपेशियों में झटके आना आदि प्रमुख लक्षण है।

इस बीमारी में मृत्यु 5–7 दिन में ही लगभग सभी संक्रमित सूकरों में हो सकती है। इस बीमारी का दूसरा रूप है अचिराकालिक जो वयस्क सूकरों में ही होता है। इसका संक्रमण काल ज्यादा दिनों का होता है। इसके प्रमुख लक्षण हैं सूकर का कमजोर होना, त्वचा पर विशेष तरह की विकृति का पाया जाना जिसमें बाल गिरना, त्वचा शोथ, कान पर चकता बनना और शरीर की त्वचा का गहरा नीला पड़ना।

उपचार एवं रोकथाम– इस बीमारी से बचाने के लिए सूकरों का टीकाकरण सबसे अच्छा तरीका है। इसके लिए दो तरह के टीके बाजार में उपलब्ध है। पशु चिकित्सक की सलाह द्वारा पहली खुराक 7–8 हफ्ते, दूसरी खुराक 6–7 महीने तथा प्रत्येक वर्ष में एक खुराक लगवानी चाहिए। इसके अतिरिक्त शीघ्र लाभ हेतु लक्षणों के आधार पर औषधि प्रदाय की जानी चाहिए।

सूकरों का टीकाकरण

क्र.	रोग का नाम	वैक्सीन या टीकाकरण		दवा की मात्रा	रोग निरोधक अवधि	दूसरा टीका	अन्य
		नाम	समय				
1.	सूकर ज्वर	टिशू कल्चर	2 सप्ताह	1 मिली. मांस में	1 वर्ष	प्रत्येक वर्ष	–
		मृत वैक्सीन	2 सप्ताह	1 मिली. त्वचा	1 वर्ष	प्रत्येक वर्ष	दूसरा टीका 1–2 माह के अंतराल पर देने से अच्छी रोग निरोधक क्षमता देखी गयी है।
2.	चेचक	–	–	–	–	–	कोई भी प्रभावकारी टीका उपलब्ध नहीं है। केवल जूँ कम करके रोकथाम की जा सकती है।
3.	मुहपका–खुरपका	मृतक टीशू कल्चर वैक्सीन	1 माह पर दूसरा प्रथम के 21 दिन बाद	5–10 मिली. त्वचा के नीचे	6 माह	प्रत्येक माह के बाद	
4.	गलघोंटू	तेलयुक्त	3 माह पर	2–3 मिली. मांस में	3–6 माह	बरसात से पूर्व	प्रत्येक बरसात से पूर्व टीका लगवाना चाहिए।

8. सूकर पालन की आर्थिकी

सूकर बहुत तेजी से वृद्धि करने वाला पशु है जो काफी कम दाम में अत्यधिक पोषक प्रोटीन खाद्य तैयार कर सकता है। आदिवासी क्षेत्रों में, जहां गरीब ग्रामीण आदिवासी पारम्परिक रूप से कुछ सूकर रखते हैं, उनके लिए सूकर पालन उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। इसलिए आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों में सूकर पालन को बढ़ावा देना चाहिए। सूकर पालन के लाभ को समझने हेतु 10 सूकरी तथा 1 सूकर इकाई की आर्थिका दी जा रही है –

अनावर्ती व्यय

1.	जमीन की लागत	1 एकड़	–	रू 20,000.00
2.	**भवनों की लागत :–**			
	सूकर बाड़े–7	(प्रत्येक 15 वर्गफीट)	– 105 वर्ग फीट	
	सूकर बाड़ा	(80 वर्ग फीट)	– 80 वर्ग फीट	
	प्रसव हेतु बाड़े–3	(प्रत्येक 60 वर्गफीट)	– 180 वर्ग फीट	
	पिल्ला बाड़े–8	(प्रत्येक 80 वर्गफीट)	– 640 वर्ग फीट	
	स्टोर		– 95 वर्ग फीट	
	कुल		– 1100 वर्ग फीट	
	निर्माण लागत	रू.200 / वर्गफीट	– 1100 वर्ग फीट	रू. 2,20,000.00
3.	**उपकरण आदि**			
			–	रू. 10,000.00
	कुल व्यय		–	रू. 2,50,000.00

आवर्ती व्यय –

1.	1 सूकर तथा 10 सूकरी की लागत प्रत्येक रू. 1000.00	रू 11,000.00
2.	आहार पर व्यय –	
–	एक सूकर प्रतिदिन 2 किलो, एक वर्ष हेतु 7 क्विंटल, दर प्रति क्विंटल 700	रू. 4,900.00
–	10 सूकरी प्रतिदिन 1 किलो, एक वर्ष हेतु 90 क्विंटल, दर प्रति क्विंटल 700 रू.	रू.63,000.00
–	160 पिल्ले एवं ग्रोअर – 4 माह हेतु कुल 120 किलो प्रत्येक पिल्ले/ग्रोअर हेतु कुल 192 क्विंटल, दर प्रति क्विंटल 700 रू.	रू. 1,34,400.00
3.	एक मजदूर एक वर्ष हेतु 1500/– प्रतिमाह की दर से	रू. 18,000.00
4.	औषधि पर व्यय	रू.10,000.00
5.	ऋण की 5 किश्तों में वापसी (एक किश्त रू. 50,000,00)	रू.50,000.00
6.	अनावर्ती व्यय पर ब्याज 10%	रू. 25,000.00
	कुल आवर्ती व्यय	रू.3,16,300.00

प्राप्तियाँ –

1.	160 सूकर बेचने पर आय (45 कि.ग्रा. प्रति सूकर 50/– प्रति जीवित वजन, 7200 किलोग्राम)	रू.3,60,000.00
2.	खाद बेचने पर आय	रू. 30,000.00
3.	खाली बेचने पर आय	रू. 10,000.00
	कुल प्राप्तियाँ –	रू.4,00000.00

शुद्ध आय –

1.	सूकर मांस, खाद, बोरा आदि बेचने पर आय	रू.4,00000.00
2.	कुल आवर्ती व्यय	रू.3,16,300.00
	शुद्ध आय	रू.83,700.00

दूसरे वर्ष से पैतृक स्टॉक की लागत नहीं लगेगी तथा अनावर्ती लागत पर ब्याज भी कम हो जाएगा। इसलिए शुद्ध आय इस प्रकार होगी –

वर्ष	**प्राप्तियाँ (आय)**	**आवर्ती व्यय**	**शुद्ध आय**
प्रथम वर्ष	400000.00	316300.00	83700.00
द्वितीय वर्ष	400000.00	311300.00	88700.00
तृतीय वर्ष	400000.00	306300.00	93700.00
चतुर्थ वर्ष	400000.00	301300.00	98700.00
पंचम वर्ष	400000.00	296300.00	103700.00
कुल	**20,00000.00**	**1531500.00**	**4,68,500.00**

इस प्रकार, एक कृषक औसतन रू. 90,000.00 प्रति वर्ष तक आय प्राप्त कर सकता है। जो परिवार की आजीविका चलाने हेतु पर्याप्त है। एक कृषक को एक माह में 12–14 सूकर तथा एक सप्ताह में 3–4 सूकर तक बेचना होगा, जो बहुत अधिक मुश्किल नहीं होगा। हालांकि शुरूआत करने के लिए कृषक 5 सूकरी तथा 1 सूकर रख सकता है तथा 10 सूकरियों को बड़ा कर सकता है।

9. छत्तीसगढ़ शासन पशुपालन विभाग संचालनालय, पशु चिकित्सा सेवाएं, छत्तीसगढ़ रायपुर विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएं

1. योजना का नाम :– अनुदान पर सूकरत्रयी का वितरण

आदिवासी उपयोजना
मांग संख्या : 41–2403–9332

क्र.	योजना	विवरण
1	उद्देश्य	1. देशी नस्ल की सूकरों का नस्ल सुधार। 2. मांस उत्पादन में वृद्धि। 3. हितग्राहियों की आर्थिक स्थिति में सुधार।
2	योजना का स्वरूप, कार्य क्षेत्र, कार्य प्रणाली	योजना में अनुसूचित जनजाति के हितग्राहियों को उन्नत नस्ल(मिडिल व्हाईट यार्क शायर) का एक नर सूकर एवं दो मादा सूकर, 90% अनुदान पर प्रदाय किया जाता है। योजना अनुसूचित जनजाति बाहुल्य क्षेत्रों में क्रियान्वित की जा रही है।
3	हितग्राही	अनुसूचित जनजाति के सूकर पालक एवं/अथवा ग्राम पंचायत द्वारा चयनित हितग्राही।
4	इकाई लागत इकाई संख्या	रू. 7900/- नर सूकर – रू. 3050/- दो मादा सूकर – रू. 4250/- परिवहन – रू. 600/- योग – रू. 7900/- (अनुदान राशि रू. 7110/- + हितग्राही अंशदान रू. 790/-)
5	अनुदान	योजना 90% अनुदान पर क्रियान्वित है।
6	योजना की उपयोगिता	आदिवासी क्षेत्र के सूकर पालकों को उन्नत नस्ल के सूकर पालन से अधिक मांस उत्पादन वाले सूकरों के विक्रय से आर्थिक लाभ होगा।
7	हितग्राही कहां संपर्क करें	निकटतम पशु चिकित्सा संस्था/जिला कार्यालय पशु चिकित्सा सेवायें ।

3. योजना का नाम :– अनुदान पर नर सूकर का वितरण।

विशेष घटक योजना : मांग संख्या : 64–2403–4016

क्र.	योजना	विवरण
1	उद्देश्य	1. देशी/स्थानीय नस्ल की सूकरों का नस्ल सुधार। 2. मांस उत्पादन में वृद्धि। 3. हितग्राहियों की आर्थिक स्थिति में सुधार।
2	योजना का स्वरूप, कार्य क्षेत्र, कार्य प्रणाली	योजना में अनुसूचित जातियों के हितग्राहियों को उन्नत नस्ल का एक नर सूकर 90% अनुदान पर प्रदाय किया जाता है। योजना अनुसूचित जाति बाहुल्य क्षेत्रों में क्रियान्वित की जा रही है।
3	हितग्राही	अनुसूचित जाति के चयनित सूकर पालक।
4	इकाई लागत इकाई संख्या	रू. 5100/- नर सूकर – रू. 3050/- आहार – रू. 2050/- योग – रू. 5100/- (अनुदान राशि रू. 4590/- + हितग्राही अंशदान रू. 510/-)
5	अनुदान	इकाई लागत रू. 5100/- में से 90% अनुदान राशि रू. 4590/-
6	योजना की उपयोगिता	अनुसूचित जाति के हितग्राहियों को उन्नत नस्ल के सूकर से देशी नस्ल की अपेक्षाकृत अधिक मांस उत्पादन की क्षमता बढ़ाने हेतु। जिससे हितग्राहियों को आर्थिक लाभ होगा।
7	हितग्राही कहां संपर्क करें	निकटतम पशु चिकित्सा संस्था/जिला कार्यालय पशु चिकित्सा सेवायें।

10. सफलता की कहानी

रायपुर से 70 कि.मी. दूर नगर पंचायत पलारी जहां के 30 से 40 परिवार पुराने पारंपरिक तरीके से सुकर पालन किया करते थें। वर्ष 2007 में शासकीय पशु चिकित्सालय पलारी के द्वारा 15 नग नर सूकर प्रदाय किया गया नस्ल सुधार हेतु विभिन्न पशु पालको को किया गया।

पशु पालको के द्वारा ज्ञात हुआ पूर्व में 30–40 परिवार के पास कुल 25 – 30 देशी नस्ल के सूकर थे जिन्हे 50–60 कि वजन तक बढ़ाने में 2 वर्ष लग जाता था प्रमुख समस्या प्रजनन था जिसके लिए दुसरे स्थान ले जाना पड़ता था (नर सूकर के आभाव में) देशी सूकरो का लीटर संख्या 6–8 तक होता था जिसमें 40–50 प्रतिशत मृत्यु दर बताया गया बचे हुए सूकर से आर्थिक लाभ नही के बराबर हुआ करता था वर्ष 2007 में प्रदाय नर सूकरो को वितरण के साथ–साथ gri. Enrouin 5ml तथा Suprgile 30 उस प्रत्येक सुकर को दिया गया रख रखाव तथा सूकर का खान–पान के सम्बंध में सम्पुर्ण जानकारी पशु पालको को दिया गया वर्ष 2008 में F_2 संतती उत्पन्न हुए जिनकी बढ़ोत्तरी (Growt rate) तथा वजन (Body weight) दोनों ही पहले सूकरों से अच्छा रहा जिससे कम समय में तथा कम लागत पर सूकर बाजार साईज पर तैयार हो गया जिससे आर्थिक मुनाफा हुआ F1 मादा का लिटर साइज 12 – 15 तथा मृत्यु दर में कमी पाया गया गाभिन मादाओं को कोढ़ा, पसिया, चावल तथा चरी पर भेजकर पालन किया गया जिससे गाभिन मादाओं का स्वास्थ्य अच्छा बना रहा तथा उनसे स्वस्थ बच्चों को जन्म दिया बच्चे का वजन 2 – 3 महिने में वजन 10 कि. ग्रा. के हो गये।

पशु पालकों को सूकर की प्रमुख बीमारी के बारे में जानकारी विभाग द्वारा दिया जाता रहा जिससे की बीमारी के लक्षण दिखने पर तुरत उपचार हेतु सम्पर्क किया जाता रहा जिससे की बीमार पशुओं का समय पर उपचार के कारण मृत्यु दर में कमी आई।

वर्ष 2009 जुलाई की स्थिति में इन पशु पालको के पास 150 के लगभग उन्नत नस्ल के सुकर तथा 100 संकर नस्ल के सुकर हैं। वर्ष 2008 मध्य से प्रत्येक परिवार को आर्थिक लाभ–सुकर विक्रय से होने लगा। वर्तमान में साप्ताहिक बाजार जिससे पलारी तथा आसपास के ग्रामो से 6000 – 7000 प्रति नग के दर से अधिक मुनाफा प्राप्त किया जा रहा हैं। जिससे इन परिवारों के आर्थिक स्थिती में बहुत परिवर्तन आया हैं।